वैदिक देवता—सत्ता और महत्ता

(डॉ० श्रीराजीवजी प्रचण्डिया, एम्०ए० (संस्कृत), बी०एस्-सी०, एल्-एल्०बी०, पी-एच्०डी०)

आराध्य देवी-देवता आदिकी परिकल्पना और धारणा आस्थापरक मनोवृत्तिपर केन्द्रित है। आस्थावादी संस्कृतियोंमें वैदिक संस्कृति एक है, जिसके मूलमें वेद प्रतिष्ठित हैं। वेदोंमें अध्यात्मकी प्राचीनता तथा मौलिकताकी अनुगूँज है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति अर्थात् रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, नियम-उपनियम, आचारिक-वैचारिक संहिताएँ, शिक्षाएँ तथा मान्यताएँ आदि सभी कुछ वेदोंपर ही आश्रित हैं—ऐसा वेदोंपर आस्था-श्रद्धा रखनेवाले लोगोंका वैचारिक आलोडन है, जो सर्वथा सत्य और सार्वभौम है।

चूँकि भक्त-समुदायमें जीवनके लिये आराध्य एक अनिवार्य आलम्बन होता है। आराध्य उनमें सदा रचते-बसते हैं। अतः वेदोंमें सम्यक्रूपसे आराध्य देवोंकी चर्चा हुई है। जहाँतक वैदिक देवताओंका प्रश्न है, वहाँ एक-दो नहीं, अनेक देवताओंका वर्णन है। जैसे इन्द्र, अग्नि एवं वरुण आदि। ये सभी देवता आदिशक्तिका ही प्रतिनिधित्व करते हैं। श्रद्धालुजन अपनी-अपनी सुख-सुविधा और मनःकामनाओंके आधारपर इनमेंसे ही किसी एक देवताको अपना आराध्य मानकर पूजते हैं।

देवता और सृष्टि परमात्माकी ही विभूति हैं। चाहे वह देवता वरुण हों या इन्द्र, अग्नि, सूर्य, मित्रावरुण, अश्विनीकुमार, सोम (चन्द्रमा), पृथ्वी, विष्णु और रुद्र आदि कोई भी क्यों न हों। सभीमें सर्वव्यापी परमात्माका एक-एक गुण विद्यमान रहता है। जैसे वेदोंने वरुणको शान्तिप्रिय देवता कहा है। इसकी मर्यादा वैदिक युगमें सर्वाधिक मानी गयी है। वरुणको प्रसन्न रखनेके लिये लोगोंको सदाचारपरक जीवन अर्थात् पवित्रतापूर्ण आचरण व्यतीत करना होता है; क्योंकि वरुणको इस जगत्का नियन्ता और शासक माना गया है। वह प्राकृतिक और नैतिक नियमोंका संरक्षक है। इसका नैतिक नियम 'ऋत' संज्ञासे अभिहित होता है, जिसका पालन करना देवताओंके लिये भी परमावश्यक बताया गया है। इसी प्रकार 'इन्द्र' ऋग्वेदका योद्धा देवता है। वह जगत्की उत्पत्ति, प्रलय आदिका संचालन करता है। इन्द्र बलिष्ठ एवं पराक्रमी देवता है। वह 'अन्तरिक्ष' और 'द्यौ' को धारण करता है। इसके भयसे पृथ्वी और आकाश काँपते दिखायी देते हैं। बिना इस देवताकी सहायताके कोई भी शक्ति युद्ध नहीं जीत सकती। इसी आधारपर वीर योद्धा समरमें जानेसे पूर्व इसकी स्तुति करते हैं। इसी प्रकार 'अग्नि' ऋग्वेदका देवता होनेके साथ-साथ यज्ञका पुरोहित भी है। वह देवताओंको यज्ञमें समर्पित हवि सुलभ कराता है। ऋग्वेदके अधिकांश मण्डल अग्निकी स्तुतिसे ही आरम्भ होते हैं। वैवाहिक संस्कारमें अग्निदेवताका प्राधान्य रहता है। यजुर्वेदमें सर्वाधिक प्रतिष्ठित देवता है 'रुद्र'। जिसे अत्यन्त उग्र स्वभावका माना गया है। यजुर्वेदमें इसकी प्रतिष्ठा इसी बातसे है कि इस वेदका सम्पूर्ण सोलहवाँ काण्ड इसीपर केन्द्रित है। एक देवता है अश्विनीकुमार। इसकी स्तुति और चर्चा भी वेदोंमें पर्याप्तरूपसे परिलक्षित है। यह देवता आयुर्वेदका अधिष्ठाता है। ऐसे ही अनेक देवताओंकी शक्ति और महत्ताका प्रतिपादन वेदोंमें द्रष्टव्य है।

वेदोंमें अग्नि, सोम, पृथ्वी आदि पृथ्वी-स्थानीय देवता एवं इन्द्र, रुद्र, वायु आदि अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता तथा वरुण, मित्र, उषस्-सूर्य आदि द्यु-स्थानीय देवताओंमें परिगणित हैं। इन देवताओंमें ऋग्वेदके सूक्तोंमें इन्द्र सर्वाधिक चर्चित देवता है। अग्नि और सोम क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थानपर आते हैं। यम, मित्र, वरुण, रुद्र और विष्णु आदि देवताओंकी स्तुति इन तीनोंकी तुलनामें तो सामान्य ही है।

इतने सारे देवताओं और उनके कार्योंको देखते हुए मनमें यह जिज्ञासा उत्पन्न हो सकती है कि ये समस्त देवता एक साथ रहते हुए अपने कार्यका सम्पादन कैसे करते हैं? इसका उत्तर यह है कि वैदिक देवता परस्पर केवल अविरोधभावसे ही नहीं, अपितु उन्नायकभावसे भी चराचर-जगत्के जो शाश्वत नियम हैं, उनके अनुसार सत्य और ऋतका पालन करते हुए अपने कर्तव्योंका विधिपूर्वक निर्वहन करते हैं और हमें प्रेरणा देते हैं कि सम्पूर्ण मानव-जाति शाश्वत नियमोंका विधिवत् पालन करते हुए समग्र द्वन्द्व तथा द्वेषको मिटाकर एक साथ

मिल-जुलकर सत्कर्म करते हुए पवित्रतापूर्ण जीवन-यापन करे। यथा—'**देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते**' (ऋक्० १०। १९१। २)। इन देवताओंकी समग्र प्रवृत्तियाँ जगत्के कल्याणार्थ हैं। ये अज्ञान और अन्धकारसे दूर प्रकाशरूप हैं, सतत कर्मशील हैं। अतः मानवमात्रका कल्याण देवताओंके साथ सायुज्य स्थापित करनेमें ही है। वास्तवमें वैदिक देवतावादसे प्राकृतिक शक्तियोंके साथ मनुष्य-जीवनकी समीपता तथा एकरूपताकी आवश्यकताका भी हमें परिज्ञान होता है।

अथर्ववेद और ऋग्वेदमें कहा गया है कि 'सत्' तो एक ही है, किंतु उसका वर्णन विद्वद्वर्ग अग्नि, यम, वायु आदि अनेक नामोंसे करता है। यह एक 'सत्' परमात्मा है, जो इन्द्र, वरुण, रुद्र आदि अनेक देवताओंमें समाया हुआ है—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

(अथर्ववेद ९। १०। २८, ऋग्वेद १। १६४। ४६)

इस प्रकार वेदोंमें जिन विविध देवताओंका गान हुआ है, वे सभी एकदेवतावादमें अन्तर्भुक्त हैं। वेदोंके इस एकदेवतावाद या एकेश्वरवादमें अद्वैतवादी, सर्वदेवतावादी तथा बहुदेवतावादी दृष्टियाँ भी समाहित हैं; किंतु वेदोंका यह एकदेवतावाद आधुनिक ईश्वरवादके स्वरूपसे यत्किंचित् भिन्न है।

अन्तमें यही कहा जा सकता है कि वेदोंमें अभिव्यक्त विभिन्न देवताओंका जो स्वरूप है, वह आदिशक्ति और सत्ताके केवल भिन्न-भिन्न नाम हैं, रूप हैं, शक्तियाँ हैं। जो लोगोंको प्रभावित कर उनके हृदयमें आराध्यरूपमें अवस्थित हैं।

वेद कथाङ्क (कल्याण-गीताप्रेस)